तृतीय : अध्याय

(अ) प्रस्तावना : उपन्यास का उद्‌भव :

भारतेन्दुजी को सबसे पहले उपन्यास के अभाव का आभास हुआ । और हिन्दी में उपन्यास लिखने के लिए लोगों के हृदय में इन्होंने ही अंकुर जमाया । इन्होंने पत्र द्वारा पण्डित संतोषसिंह का ध्यान उपन्यास सर्जना की ओर आकृष्ट किया था । इन्हीं कारण लोगों की रुचि उपन्यास में हुई और कई उपन्यास बंग भाषा में अनुवादित हुए तथा नये मौलिक भी लिखे गये । भारतेन्दु ने स्वयं उपन्यास लिखने और अनुवाद करने का सफल प्रयास किया ।

भारतेन्दु के अनुसार इनकी पत्रिका "हरिश्चन्द्र चन्द्रिका" नामक में (सन् 1875) के फरवरी – मार्च अंक में प्रथम प्रकाशित उपन्यास "मालती" है पर यह रचना अधूरी है । भारतेन्दु के बाद दूसरा नाम पं. बालकृष्ण भट्ट का है । उनका उपन्यास "रहस्यकथा" है । यह उपन्यास भी अपूर्ण माना गया है । इन सबके अतिरिक्त प्रो0 विजयशंकर मल्ल के अनुसार यह गौरव सच्चे अर्थ में "परीक्षा गुरु" या निःसहाय हिन्दी को ही प्राप्त है ।

" परीक्षागुरु" में आधुनिक उपन्यास की सभी विशेषताएं पाई जाती है । 19वीं शताब्दी के अन्तिम चरणों में उपन्यास साहित्य के उद्भव के लिए सामाजिक एवं साहित्यिक परिस्थितियाँ अनुकूलता की ओर अग्रसर थी ।

भारतेन्दुकालीन लेखकों ने बदलते हुए राष्ट्र, समाज, परिवार और मनुष्य का चित्रण किया । उनकी दृष्टि में व्यक्ति की अपेक्षा समष्टि का अधिक महत्व था । उनमें केवल राधाचरण गोस्वामी ने ही व्यक्ति को युग की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया था ।

आज के हिन्दी उपन्यास की सर्जनशील संभावनाओं को अनगिनत आयाम भेंटने का श्रेय प्रेमचन्द की औपन्यासिक कृति "गोदान" को प्राप्त है ।

"उपन्यास" शब्द की आधुनिक व्याख्या प्राचीनकाल की व्याख्या से भिन्न है । यह शब्द भिन्न – भिन्न भाषाओं में भिन्न – भिन्न रूपों में प्रयुक्त होता था, किन्तु आज हिन्दी साहित्य में कथा – साहित्य के लिए रूढ हो गया है । अंग्रेजी में इसे "नोवेल", बंगला में "उपन्यास", मराठी में "कादम्बरी" तथा गुजराती में "नवलकथा" नाम से अभिहित किया जाता है ।

संस्कृत के "अमरकोश" में उपन्यास के लिए "उपन्यासस्तु वाङ• मुखम्" कहा गया है, जिसका अर्थ है -- "किसी बात को कहने का उपक्रम बनाना । संस्कृत में उपन्यास की व्याख्या दो अर्थों में की गई है -- §1§ "उपन्यास प्रसादनम्", कहा गया है जिसका अर्थ प्रसन्न करना, आनंन्द देना होता है ।" ।§2§ दूसरे अर्थ में "उत्पत्तिकृतो ह्यर्थः का प्रयोग हुआ है । इसका तात्पर्य किसी भी विषय को युक्तियुक्त ढंग से प्रस्तुत करना है ।

उपन्यास को कुछ लोग इसे फ्रैंच के "नोवो" से व्युत्पन्न मानते हैं "नोवो" का शाब्दिक अर्थ नवीनता से लिया जाता है ।

"उपन्यास" शब्द दो शब्दों के योग से व्युत्पन्न हुआ है । वे शब्द हैं - "उप+न्यास" "उप" का अर्थ है - निकट तथा "न्यास" का अर्थ है रखना । सामुहिक अर्थ - निकट रखी हुई वस्तु से लिया जा सकता है ।

§1§ "उपन्यास" वास्तव में समाज की बौद्धिकता, सक्रियता और चेतना का मान दण्ड है ।"§2§ हेनरी जेम्स उपन्यास की परिभाषा इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं -- " उपन्यास अपनी व्यापकत्तम परिभाषा में जीवन का वैयक्तिक और प्रत्यक्ष प्रतिबिम्ब है । " A novel is in its brodest definition a personal, a direct in pressod of life. "

§2§ डॉ0 हबर्ट जे0 मुलर के शब्द में — "उपन्यास मूलतः मानवीय अनुभव का निरूपण है और इस प्रकार उपन्यास में अनिवार्यतः जीवन आलोचना होती है ।" The novel is typically a representation of human experience whether liberal or ideal and therefore inevitably a comment upon life.

§3§ मार्क्सवादी विचारक राल्फ फाक्स के मत से -- "उपन्यास हमारी सभ्यता की महान लोक कला है ।"§3§

§4§ "उपन्यास" मात्र कथात्मक गद्य नहीं, वरन् मानव के जीवन का गद्य है -- The novel is not merely a fictional prose, it is the prose of man's life.

§5§ पश्चिमी विद्वानों ने भी उपन्यास को मानव - जीवन से सम्बन्धित माना है । उपन्यास की परिभाषा को स्पष्ट करते हुए राल्फ फाक्स ने लिखा है -- " The novel is not merely prose, It is prose of man's life, the first art to attempt to take the whole man and give him expression ." 2

1. हिन्दी साहित्यकोश - पृ0 139
2. हिन्दी उपन्यासों में नायक - डॉ कुसुम वार्ष्णेय
3. 1 The novel and the people - F.L.P.H... Moscow 1954-Page- 51
2 Novel and the people, P. 52

§6§ उपन्यास मानव - जीवन एवं समाज के बीच की कड़ी है, जिसके माध्यम से मानव - जीवन की कठिनाईयाँ, दुःख - सुख एवं समस्याओं को समाज में प्रसारित करता है, तथा समाज में प्रचलित गन्दे रीति - रिवाज, परम्पराओं की भी आलोचना करता है ।

लार्ड डेविड सिसिल ने उपन्यास के लिए अपना मत व्यक्त किया है =

" A novel is a work of art in so far as it introduces us in to a living world, in so respects resembling the world we live in but with an individuality of its own. " 1

उपन्यासकार में कहानी कहने की प्रतिभा होना अति आवश्यक है । इस प्रतिभा द्वारा ही वह उपन्यास के प्रवाह को सुन्दरगति प्रदान कर पाठकों को उपन्यास की समाप्ति तक चमत्कृत एवं उत्सुक बनाये रख सकता है । उपन्यासकार को यह दिखलाना पड़ता है कि वे किस प्रकार एक दूसरे का परिचय प्राप्त करते हैं । उपन्यासकार की दृष्टि के माध्यम से ही पाठक पात्रों की आँखों की नीली गहराइयों तक उसी प्रकार सरलता से उतर जाता है जैसे अरक्षित प्राचीन गुफाओं में जन्तु बेरोकटोक घुस जाते हैं ।

कहानी की सहायता से ही उपन्यासकार कथानक के आधार पर कथावस्तु का निर्माण करता है । उपन्यास लिखने के पूर्व लेखक कथानक का चुनाव करता है जिसमें कहानी बीजरूप में वर्तमान रहती है । तत्पश्चात् वह उसे एक ऐसे ढांचे में ढालता है कि जिससे उसके उद्देश्य की सिद्धि हो सके ।

उपन्यास के तत्वों §शिल्प§ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान कथानक अथवा कथावस्तु का होता है। उसके उचित संघटन एवं निर्वाह में उपन्यासकार का कौशल निहित है। कोई - न - कोई विशेष योजना या सूत्र होता है, जिसके, जिसके आधार पर उपन्यासकार अपने उपन्यास की कथा का आयोजन करता है । इस युग में कहानी सुनाना उपन्यासकार का अभीष्ट नहीं ।" आधुनिक उपन्यासकार प्रसादन से अधिकप्रयोजन पर दृष्टि रखता है । वह मूल्य देना चाहता है । कथा का रस नहीं । ये मूल्य समस्त साहित्य के केन्द्र मानव के लिए होते हैं और मानवीय समस्याओं के निरीक्षण - परीक्षण तथा व्याख्या - विश्लेषण से ही प्राप्त किए जा सकते हैं, अतएव उसकी दृष्टि चरित्र पर जाती है, कथा पर नहीं । " §2§

---

1. Hardy the Novelist
2. डॉ० सत्यपाल चुध : प्रेम चन्दोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि, पृ० 84 पर श्री चुध और §उपन्यासकार जैनेन्द्र के विचार

अब प्रश्न यह उठता है, क्या साहित्य को कुछ विशिष्ट लोगों तक ही सीमित कर दिया जाय ? सामान्य व्यक्ति अपने उलझन भरे जीवन से त्राण पाने के लिए केवल कुछ सस्ते किस्म के मनोरंजनों का ही प्रयोग करें ? क्या उपन्यास को इतना क्षमतावान एवं व्यापक बनाने के लिए ही सुसंगठित एवं श्रृंखलाबद्ध कथानक की आवश्यकता का अनुभव किया गया है । इसलिए आज भी कतिपय मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों को छोड़कर संगठित कथानक वाले उपन्यास लिखनेवाले उपन्यासकारों संख्या ही अधिक है । और इसीलिए अधिकांश समीक्षकों ने भी उपन्यास के तत्वों में कथानक के महत्व को सर्वोपरि स्वीकार किया है तथा उसके समुचित विन्यास एवं संगठन पर बल दिया है ।

सुप्रसिद्ध समीक्षक डॉ0 भगीरथ मिश्र का मत द्रष्टव्य है -- " यह धारणा भ्रांत है कि उपन्यास में कथानक का कोई महत्व नहीं, या सामान्य कथानक को भी वर्णन - कौशल द्वारा उत्तम बनाया जा सकता है । क्योंकि यदि वर्णन-कौशल के साथ कथानक की उत्कृष्टता भी मिल जाय तो मणिकांचन योग होगा । कथानक के समुचित विकास के लिए उसे घटनाओं के पूर्वापर सम्बन्ध, कुतूहल और औचित्य को ध्यान में रखकर स्थिर करना चाहिए । "(1) पाश्चात्य विद्वान हेनरी जेम्स ने भी कथावस्तु के महत्व को कुछ दूसरे ढंग से प्रतिपादित किया है । उनके अनुसार "चरित्र हमारे सामने किसी - न - किसी कार्य के प्रसंग में ही आते हैं और कार्य ही कथावस्तु का आधार है ।"(2) अतः यह कहा जा सकता है कि उपन्यास में कथानक का होना अत्यन्त आवश्यक है, और उपन्यासकार की सफलता बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करती है कि उसने कथावस्तु को किस ढंग से नियोजित किया है । कथावस्तु का क्रम अथवा आयोजन ही वह तत्व है जो एक कथावस्तु को दूसरी कथावस्तु से पृथक करता है ।

उपन्यास शिल्प के अन्य तत्वों का प्रयोग कथानक की भूमिका के आधार पर किया जाता है । कथानक घटनाओं को स्पष्ट करता है । यह शिल्प तत्व उपन्यास के लिए अति उपयोगी है । उपन्यास में कथानक कथा को प्रस्तुत करता है, चरित्रों का उद्घाटन करता है, देशकाल सम्बन्धी सीमाओं का निर्धारण करता है, तथा भाषा शैली को नया रूप प्रदान करता है । कथानक दो प्रकार का होता है ।

---

1. डॉ0 भगीरथ मिश्र : काव्यशास्त्र - पृ0 89
2. Robert Liddell; A treatise in the novel, Page 72

प्रथम सरल कथानक जिसका प्रयोग लेखक उपन्यासमें सीधी एवं सपाट तथा एक ही कथा को लिए चलता है । द्वितीय जटिल कथानक, जिसमें लेखक एकाधिक कथाओं को एक ही स्थल पर नियोजित करता है । उपन्यासों के अधिकांश कथानक जटिल होते हैं, क्योंकि उनमें घटनाओं का भंवरजाल होता है । कथानक मौलिक एवं आकर्षक होना चाहिए । यों तो अनुवादित कथानक वाले भी उपन्यास होते हैं ।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में कथानक के आकार - प्रकार का निर्धारण करना बड़ा कठिन कार्य है । एक तरफ अल्पाकार कथानक वाले उपन्यासों का निर्माण हुआ है, वहीं दूसरी तरफ बृहदलाय एवं स्थूल कथानक वाले उपन्यास भी निर्मित हुए हैं । इसी युग में सामाजिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक, आदि विभिन्न प्रवृत्तियों वाले उपन्यास भी मिलते हैं । प्रेमचन्द युगीन उपन्यासों में कथानक क्षेत्र विशेष की ओर इंगित न करके समाज का सामुहिक रूप से अध्ययन करते हैं । कथानक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा रूढ़िवादिता आदि विषयों से सम्बन्धित है । समाज में हो रहे कुकृत्यों एवं अनैतिकताओं की इस युग के उपन्यासों में तीव्र निन्दा की गई है । नारी समस्या का आँखों देखा हाल ये उपन्यास बताते हैं । इस युग के उपन्यासों में एक कथानक में अनेक समस्याएँ और एक ही समस्या को विस्तृत रूप से एक विधवा विवाह एक समस्या है, दहेज - प्रथा समाज की एक दूषित समस्या है, इस प्रकार बहुत सी विकट समस्याएँ उस युग में थी जिसका पर्दाफाश करने के लिए प्रेमचन्द, कमलेश्वर जैसे दिग्गज कथाकारों ने उपन्यासों की रचना की । कमलेश्वर एवं प्रेमचन्द्र ने नारी समस्या को मुख्य रूप से अपना विषय बनाया है ।

आज का समाज अनुकरण पद्धति को अधिक पसन्द करता है । अतः उपन्यास में घटित होनेवाली घटनाओं का प्रभाव उस पर अवश्य पड़ता है । कथावस्तु का ताना-बाना हमें ऐसी ही सामग्री से लेना है जो अपने अनुभव की बात हो । कल्पना कहानी को आकर्षण - वृद्धि कर सकती है पर उसकी अतिशयता कथावस्तु का दोष होती है । कथावस्तु संघटन की सबसे पहली शर्त है कि लेखक अपने प्रति इमानदार हो । वह जो जानता हो वही लिखें । अंग्रेजी की प्रसिद्धि-प्राप्त स्त्री लेखिका ने अन्य स्त्री लेखिकाओं के विषय में लिखते हुए कहा है कि - "वे वहीं असफल होती हैं जहां वह पुरुष लेखकों की भांति लिखने का प्रयत्न करती हैं । " (1)

---

1. William Henry Huson - " An introduction to the study of literature P. 175

§आ§ कथावस्तु की प्रमुख विशेषताएँ :

§1§ मौलिकता:

प्रत्येक साहित्यकार की सबसे बड़ी कसौटी मौलिकता है, उपन्यास के कथानक में भी इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती । विस्तृत संसार में से नवीन विषय के चयन, नवीन उद्भावना एवं उसके कुशल संयोजन, वर्णन - कौशल तथा प्रस्तुतीकरण के द्वारा उपन्यासकार अपनी मौलिकता का परिचय दे सकता है । उपन्यासकार की मौलिकता इस बात में भी निहित है कि वह घटनाओं को इस प्रकार प्रस्तुत करे कि एक क्रम तो बना रहे, वह आगामी घटना और अन्तिम परिणाम अनुमान कदापि न लगा सके ।

§2§ प्रबन्ध कौशल :

उपन्यास की प्रमुख एवं गौण कथाओं को इस प्रकार संगठित किया जाय कि उनमें कार्य - कारण श्रृंखला बनी रहे एवं समग्र प्रभाव खंडित न हो, इसी कलात्मक संगठन को प्रबन्ध - कौशल कहा गया है । उपन्यासकार के लिए प्रबन्ध - कौशल अनिवार्य है, विशेषकर वृहदकाय उपन्यासों में कथा के अनेक सूत्रों को अपनी लेखनी से समेटे रहने में उपन्यासकार की महती प्रबंध क्षमता छिपी रहती है । प्रासंगिक कथाओं को आधिकारिक कथा से पूर्णरूपेण सम्बद्ध होना चाहिए, जिससे प्रत्येक प्रासंगिक कथा अधिकारिक कथा की सहायिका बने एवं उसमें अधिक प्राणशक्ति भर दे । एक समीक्षक ने लिखा है -- "आधिकारिक कथानक महानद के समान होता है जिसे पूर्ण बनाने में प्रासंगिक कथानक सहायक नदियों के समान सहयोगी होते हैं और प्रमुख कार्य - व्यापार को और अधिक प्रभावशाली बनाते हैं ।" §1§ इस प्रकार कहा जा सकता है कि जीवन से चुने गए तमाम बिखरे सूत्रों को कलात्मक ढंग से विशिष्ट योजना के द्वारा संगठित करना ही प्रबन्ध - कौशल है, इससे कथानक की शोभा द्विगुणित हो जाती है ।

§3§ संभवता :

उपन्यास की प्रत्येक घटना एवं वर्णन वास्तविकता पर आधारित होना चाहिए । यदि उपन्यासकार उपन्यास के उद्देश्य को पूरा करने के लिए अथवा सस्ती रोचकता उत्पन्न करने के लिए अनूठी कल्पना एवं असंभाव्य घटनाओं को समाविष्ट करता है, तो उपन्यास की साहित्यिक सफलता की आशा नहीं करनी चाहिए । इस सम्बन्ध में डॉ0 श्री नारायण अग्निहोत्री का कथन द्रष्टव्य है --

---

1. डॉ0 रामलखन शुक्ल, हिन्दी उपन्यास - कला पृ0-20

" कल्पना से कहानी के आकर्षण की वृद्धि तो होती है पर उसकी अतिरंजना कथावस्तु का दोष बन जाती है । कथावस्तु के संघटन की सबसे पहली शर्त यही है कि लेखक अपने प्रति ईमानदार हो । वह जो जानता हो, वही लिखे। "§1§ ऐसा नहीं है कि उपन्यास में कल्पना का प्रवेश ही नहीं होना चाहिए । उपन्यासकार एक स्त्रष्टा है, वह अपने चारों ओर फैले विस्तृत संसार में से नवीन सृष्टि का सृजन करता है और इसके लिए कल्पना का सहारा लेना नितांत आवश्यक है । परन्तु उसकी कल्पना यथार्थाधारित होनी चाहिए । असंगत या असंभव होने पर वह पाठक का विश्वास प्राप्त नहीं कर पाएगी और इससे उपन्यास की प्रभावान्विति को क्षति पहुंचे बिना नहीं रहेगी । स्वानुभूत ज्ञान के आधार पर जो रचना लिखी जाती है उसमें हृदय की गहराई का आभास स्पष्ट रूप से मिल जाता है, अन्यथा उधार लिखा गया ज्ञान अपने छिछलेपन को तुरन्त प्रकट कर देता है । इसीलिए उपन्यास - सम्राट मुंशी प्रेमचन्द ने लिखा है -- "अगर किसी लेखक की बुद्धि, कल्पना - कुशल है तो वह सूक्ष्मतम भावों से जीवन को व्यक्त कर देती है । वह वायु के स्पंदन को भी जीवन प्रदान कर सकती है । लेकिन कल्पना के लिए कुछ आधार अवश्य चाहिए । जिस - तरूण - लेखिका ने कभी सैनिक - छावनियाँ नहीं देखी उससे यह कहने में कुछ भी अनौचित्य नहीं कि आप सैनिक - जीवन में हाथ न डालें ।"§2§ अतः यह आवश्यक है कि उपन्यासकार उन्हीं क्षेत्रों, वस्तुओं एवं घटनाओं के द्वारा कथानक का ढाँचा निर्मित करे, जिन्हें उसने स्वयं देखा हो अथवा अनुभव किया हो । वह उस कल्पना को भी अपने कथानक में समाविष्ट कर सकता है जो यथार्थ - जैसी प्रतीत हो अथवा यथार्थ पर आधारित हो । आज - कल तो ऐसा भी सुनने में आया है कि कोई साहित्यकार अपनी रचना में यथार्थता लाने के लिए रचना में वर्णित क्षेत्र की यात्रा करते हैं, उस स्थान के जीवन का साक्षात् अनुभव करते हैं और उस अनुभव के आधार पर रचना में वास्तविकता लाने का सफल प्रयास करते हैं ।

§4§ सुगठन :

किसी भी अच्छे उपन्यास को सुगठित तो अवश्य होना चाहिए । उपन्यासकार के लिए आवश्यक है कि वह अपने उद्देश्य की पूर्ति में सहायक, आवश्यक बातों को ही ले, अनावश्यक को बिल्कुल छोड़ दे । अपने ज्ञान को प्रकट करने के मोह में कई लेखक

---

1. डॉ0 श्री नारायण अग्नि होत्री : हिन्दी उपन्यास साहित्य का शास्त्रीय विवेचन - पृ0 185
2. "उपन्यास" पर श्री प्रेमचन्द का निबन्ध §हिन्दी उपन्यास - डॉ0 शिवनारायण श्रीवास्तव - पृ0 445 उद्धृत ।

अपनी कृति के सौन्दर्य को बिल्कुल विनष्ट कर देते हैं । अनावश्यक घटनाओं या क्रिया - कलापों के विस्तार से कथा की सारी योजना निष्फल हो जाती है और उपन्यास बोझिल हो उठता है । इसलिए उपन्यासकार को चाहिए कि वह बिना किसी लोभ में फँसे हुए, बिल्कुल निर्मम होकर आवश्यक का त्याग और आवश्यक का ग्रहण करे । उपन्यासकार को विपुल घटनाओं को इस प्रकार जमाना चाहिए जैसे कि एक शिल्पी भवन - निर्माण के लिए एक - एक ईट जमाता है । घटनाओं की एक - एक ईट इस प्रकार जुड़ी हो कि बीच से निकालते ही न बने और यदि किसी प्रकार निकाल ही दी जाय तो कथावस्तु का सम्पूर्ण भवन, हिल उठे - ऐसे सुगठन में ही रोचकता है -- उपन्यास का एक महत्वपूर्ण कार्य रोचकता या मनोरंजन प्रदान करना है । अपने जीवन के मुक्त एवं खाली क्षणों में, अपने कार्यभार के तनाव से छुटकारा पाने के लिए हमें किसी मनोरंजन कहानी से सहायता मिल सकती है, यदि कोई कहानी इस कार्य को पूरा करती है तो वह हमारे लिए एक पूर्ण टॉनिक बन जाती है और इस प्रकार वह अपने उद्देश्य को निश्चित रूप से पूरा कर देती है ।"(1) रंजकता एवं रोचकता का यह गुण कई प्रकार से प्राप्त किया जा सकता है । उपरिविवेचित विशेषताओं के समावेश से भी उपन्यास में रोचकता आ जाती है, तथापि सर्वाधिक रोचकता आकस्मिक एवं अप्रत्याशित घटनाओं के संयोजन से लाई जा सकती है। परन्तु रोचकता के लिए बार - बार आकस्मिक का सहारा लेना उचित नहीं, वरन् ऐसी अप्रत्याशित घटनाओं का संयोजन अधिक उपयुक्त होता है जो पूर्ण रूपेण आकस्मिक न हो, तथा पाठक उनकी संभावना को स्वीकार कर सके ।

(ई) <u>कथावस्तु के भेद :</u>

कथावस्तु के दो भेद किए गए हैं --

(1) सादा - इसमें एक ही कथा होती है ।

(2) <u>गुम्फित</u> : इसमें एक से अधिक कथाएँ होती हैं, इनमें एक प्रमुखकथासूत्र होता है और वह उपन्यास के प्रमुख पात्र से सम्बन्धित होता है । इसी प्रमुख कथा सूत्र को अंग्रेजी में "थीम" की संज्ञा से अभिहित किया गया है । नाटक की ही भाँति इस प्रमुख कथा को "आधिकारिक कथा" कहा गया है । मुख्य कथानक को गतिशील एवं प्रभावशाली बनाने के लिए छोटी - छोटी कथाओं का समावेश उपन्यास में होता है --

---

1. William Henry; An Introduction to the study of literature, P.132

इन्हें "प्रासंगिक कथा" कहा जाता है । प्रासंगिक कथाओं को अंग्रेजी में "एपीसोड" या "अंडरप्लाट" की संज्ञा दी गई है । प्रासंगिक कथा के "एपीसोड" नाम के कारण अंग्रेजी में "एपिसोडिक ट्रीटमेन्ट" नाम से एक पद्धति प्रसिद्ध है, इसमें एक मुख्य कथासूत्र नहीं होता वरन् अनेक छोटी - छोटी प्रासंगिक कथाएँ आपस में इस प्रकार जुड़ी होती हैं कि उनमें से किसी एक को प्रमुख कह पाना कठिन हो जाता है । इसे हिन्दी में "प्रसंग पद्धति" का नाम दिया गया है । "§1§

§ई§ कमलेश्वर जी के उपन्यासों का कथा - संगठन :

§1§ एक सड़क सत्तावन गलियाँ :

इस उपन्यास में समयोत्तर पूर्व की कस्बाई जिन्दगी का अत्यन्त स्वाभाविक एवं मार्मिक चित्रण कमलेश्वर ने इसमें किया है । इस लघु उपन्यास में मैनपुरी कस्बे का जीवन अत्यन्त सजीव हुआ है । इस रचना में नायकत्व का ह्रास हुआ है । सरनाम सिंह, रंगीले और रविराज ये तीनों खण्डित व्यक्तित्व को लिये हुए हैं । यही स्थिति इसमें नारी पात्रों की हुई है । वंशी, हेम और कमला तीनों का रूप और पद नायिका जैसा ही है । उनके साथ उनके दुख, दर्द, आशा, निराशा और पीड़ा यथा की यह कहानी है । इस रचना के सभी पात्र उस वर्ग के सदस्य हैं । जिन्हें किसी न किसी रूप में समझाया गया है । इस कहानी का अंत स्वतन्त्रता के पश्चात् हुआ । देश को स्वतन्त्र करने के लिए मध्य और निम्न वर्ग के लोगों ने आजादी की लड़ाई लड़ी थी । उन्होंने अपनी आँखों से अपने सपनों को टूटते हुए देखा । कइयों के अरमान बिखरे और हजारों की आशायें मिट गयीं । इस रचना के पात्र मास्टर हबीब, सम्पादक निर्मोही, और वाजा मास्टर ऐसे व्यक्तियों में से थे । कमलेश्वर के इस उपन्यास में मास्टर हबीब जैसे समाज से लड़ते - लड़ते "रेणु" के कितने "चौराहे" में आकर मास्टर हफीज हो जाते हैं । हफीज साहब जो जनता की निगाह में पागल हो गये लेकिन हिन्दू - मुस्लिम दंगे में किसी ने उन पर किरोसीन डालकर आग लगा दी । इस रचना में कमलेश्वर ने सरनाम और बंशी इन दोनों के चरित्र को बड़ी ही सहजता के ढाला है । सरनाम के बारे में बंशी का यह कथन उचित ही है, कि " जब वह आँखों के सामने होता, उसका होना अनुभव में होता है तो प्रतिहिन्सा धधकती रहती, आँख ओट होते ही जतीयता भरी छटपटाहट सुलगने लगती है । न उसका जीना सह पाती थी और न मरना ।"§2§ इस सरनाम का चरित्र एक ठोस धरातल को लिए हुए है।

1. सं. मन्मथनाथ गुप्त : समसामयिक हिन्दी साहित्य : उपलब्धियाँ - पृ0 93
2. एक सड़क सत्तावन गलियाँ : कमलेश्वर - पृ0 पृ. 385

बंशी से वह नफरत भी करता है तो प्यार भी करता है, पर वंशी का प्यार द्विधाजनक है । इस कहानी में मालिक और मजदूर, वकील और मुहर्रिर, दुकानदार और नौकर सभी एक ही नाव में हैं, और उस नाव के चारों ओर एक तरह का तूफान उमड़ रहा है । लेखक ने इसमें निम्नवर्गीय समाज के आर्थिक, सामाजिक और वैयक्तिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया है । कई पात्र इसमें ऐसे भी हैं जो शोरगुल में गुम हो गये जिनके टूटने की आवाज भी नहीं आयी । इनमें अनेक पात्रों के होते हुए भी लेखक ने उन सबको अत्यन्त सूत्रता में कथा संगठन में बाँधकर प्रस्तुत किया है न कहीं पर तो बिखराव है और न असम्बन्धता । इसका कथ्य एकदम नया है जो कथा को अनुकूल रूप में प्रस्तुत कर सका है । इस उपन्यास की कथावस्तु "सामाजिक चिन्तन के साथ - साथ इसमें कोमल व कठोर भावों का सुन्दर अंकन हुआ है । क्योंकि लेखक की दृष्टि ही व्यापक और सबल है ।

§2§ "डाक बंगला" :

इस उपन्यास में पूर्व दीप्ति पद्धति का प्रयोग "इरा" नामक युवती की आत्म बीती को आत्मकथात्मक शैली में बहुत ही प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया । इरा की कहानी एक ऐसी युवती की कहानी है जिसने अपने जीवन में अनेक उतार चढ़ाव देखें, अच्छे और बुरे से होकर गुजरी, और वह हर जगह हारती जीतती हुई आगे बढ़ी है । इरा एक विधवा युवती है जो आडू के डाक बंगले में ठहरी हुई है । जहां पर उसने अपनी टूटी हुई जिन्दगी की अनुभूतियों को अनेक संकेत और बिम्बों के द्वारा अभिव्यक्त किया है । इस उपन्यास की कहानी काश्मीर से शुरू होती है जहां इरा डाकबंगले में तिलक और सोलंकी के साथ ठहरी है । यहीं पर उसने इधर - उधर की सैर करते हुए अपनी आत्मकथा सुनायी । "जहां तक अनुभूतियों का प्रश्न है विशेषकर नारी जीवन की तृषित और कष्टदायक उपलब्धि है, इसमें एक असाधारण नारी "इरा" के माध्यम से एक साधारण नारी की विपत्ति और उसके अभ्यान्तरिक एवं बाह्य संघर्ष को रूपायित किया जा सका है । उपन्यास के अनेक स्थल ऐसे हैं जहाँ जीवन की गहन अनुभूतियाँ बोलती है और पाठक रूक कर सोचने को विवश हो जाता है ।

इस उपन्यास में "इरा" मध्य वित्तीय परिवार की लड़की है । यौवन की पहली सीढ़ी पर वह फिसल जाती है । इरा को नाटक प्रेमी सज्जन ने रंगमंच को प्रलोभन देकर उसे अपनी वासना का शिकार बनाता है । इसी प्रकार बतरा,

डॉ0 चन्द्र मोहन एक के बाद एक इरा को फाँस लेते हैं । इसमें मजबूरी इरा की कामयाब नहीं होने देती । इरा मजबूरी के वश होकर अपना शरीर दाव पर लगा देती है । इरा का कहना है कि अगर दुनियाँ में जिन्दा रहना हो तो आदमी का साया जरूर चाहिए नहीं तो नारी का कोई अस्तित्व नहीं है । एक बार जिन्दगी की राह गुम होने पर, प्रयास करने के बाद भी मिलती नहीं और मिलती भी है तो वक्त गुजरने के बाद जबकि जीवन के पड़ाव में उसका कोई महत्व नहीं रहता विमल से धोखा खाने के बाद "इरा" की वह जिन्दगी शुरू होती है जहाँ वह सोचती है - " मेरी आत्मा का कौना - कौना यादों से भरा हुआ है । मेरी आँखों में हर उस आदमी की तस्वीर है जिसके साथ मैंने थोड़े से भी दिन गुजारे हैं । सभी ने विलास किया मेरे साथ । "{1} इरा के जीवन में विमल के अतिरिक्त और तीन पुरूष आये । बतरा, सोलंकी और डॉक्टर । इन चारों के प्रति अपनत्व और आकर्षण उसे रहा । उसे प्रेम नहीं कह सकते । इन चार पुरूषों में डाक्टर के पास वह विशेष स्थितियाँ लाकर छोड़ी गयी थी । झूठे आदर्श और प्रेम को इरा स्वीकार नहीं करती । उसने कहा भी है, " हर बात को आदर्श के पर्दे में रखकर मत देखो, तिलक । गन्दी चीज पर पर्दा डाल दो तो उसकी झिल - मिलाहट खूबसूरत लगती है । इसलिए आदर्श का जामा जिन्दगी को मत पहनाओं ।"{2} इस उपन्यास में बतरा आधुनिक दलाल है । सम्बन्धों को बनाना और तोड़ना यही उसका काम है । सम्बन्धों को बनाये रखने के लिये वह औरतों के उपयोग को जायज मानता है । अफसरों से दोस्ती कर वह व्यापारियों का काम करता था । शीला नामक युवती से सदा सहायतामिली । इरा को बतरा, सोलंकी और डॉक्टर के साथ रहते हुए उसने प्रेम से अधिक करूणा ही दी है । हर बार वह गत जीवन को काटकर फेंक देती है । और नयी जिन्दगी शुरू करती है । इरा तिलक और सोलंकी के सहवास में आती है । पर सोलंकी से अधिक तिलक से ही वह धुल मिल सकी । तिलक से वह कहती है, -- "जिसे मैंने सब कुछ बनाया है, उससे शादी न कर सकी क्योंकि मैं यह नहीं कह सकती कि तुम मेरी जिन्दगी में पहले हो । जो भी मेरी जिन्दगी में आया उसने जाने अनजाने घुमा फिराकर या सीधे - सीधे या हमेशा यही जानने की कोशिश की मैंने पहले किसी से प्यार तो नहीं किया.... पुरूष का यही सबसे बड़ा सन्तोष है

---

1. डाक बंगला - कमलेश्वर - पृ0 30 - 36
2. पूर्वोक्त : पृ0 75

और हर बार मैंने अपने हर प्रेमी से यही कहा कि तुम मेरी जिन्दगी में पहले हो, तुम प्रथम हो ।" ‖1‖

इस प्रकार इस उपन्यास की कथावस्तु वास्तव में इरा की काम भावनाओं को सेक्स के आधार पर मनोविज्ञान के सहारे विश्लेषित "डाक बंगला की कथा एक साथ दो रास्तों पर चलती है वास्तव में यह कथा उसके बाह्य और अन्दर को कहानी है कश्मीर यात्रा और सोलंकी इसकी बाह्य कथा के साथी है । जब कि तिलक और इरा का अतीत उसके आन्तरिक कथा के साथ चलता है । सोलंकी, बतरा या डाक्टर को उसने अपनी उस बाह्य यात्रा का साथी बनाया है ।" ‖2‖

‖3‖ काली आँधी :

एक लम्बे अरसे के पश्चात कमलेश्वर का यह लघु उपन्यास प्रकाशित हुआ । व्यक्तिगत और सामाजिक दो भिन्न स्तरों पर एक साथ इस लघु उपन्यास का कथा चक्र चलता है । काली आँधी की कहानी एक और असफल दाम्पत्य की करूण कहानी लगती है । तो दूसरी ओर सम्पूर्ण देश में व्याप्त छल, कपट और षडयन्त्र की करूण कहानी है । इस रचना में लेखक ने मालती और जग्गी बाबू के माध्यम से उन्हीं के प्रश्नों और स्थितियों द्वारा, सम्पूर्ण युग के प्रश्नों और स्थितियों पर प्रकाश डाला है । यही कारण है कि यह लघु उपन्यास आकार में संक्षिप्त होते हुए भी जीवन के विशाल पटल को लेकर चला है । आज के जीवन में भ्रष्टाचार और राजनीति ने इस प्रकार प्रवेश किया है कि कहीं पर भी, चाहते हुए भी सामान्य व्यक्ति उससे मुक्ति नहीं पाता एक गहरी और व्यापक वेदना "काली आँधी" में सर्वत्र देखने को मिलती है उसके साथ वर्तमान समाज का सत्य जुड़ा हुआ है । इस रचना के हर पात्र में किसी न किसी प्रकार का प्रतीक है । मालती उस पूँजीवादी व्यवस्था का प्रतीक है जो अपने हित और स्वार्थ के लिए आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्ग का शोषण करती । उन्हें बहकाती है । और उनकी कमजोरी का हर जगह जितना सम्भव हो सका उतना फायदा उठाती है । स्वार्थी और खुदगर्ज व्यक्ति के चित्रण में लेखक ने मालती के रूप में एक स्वाभाविक और प्रभावी पात्र का निरूपण किया है ।

इस उपन्यास में मालती के स्वभाव के विपरीत जग्गी बाबू हैं जिन्हें न राजनीति से लगाव है और न झूठी प्रतिष्ठा से मालती पर राजनीति का नशा कुछ ऐसा हावी

---

1. कमलेश्वर - डाक बंगला - पृ0 75
2. डॉ0 घनश्याम मधुप - हिन्दी लघु उपन्यास, पृ0 166

हो जाता है कि वह जग्गीबाबू की परवाह ही नहीं करती । जग्गीबाबू का स्वाभिमान उन्हें कहीं पर भी समझौता नहीं करने देता । वे इस बात को जानते थे कि उच्च वर्गीय जिन्दगी कितनी खोखली और झूठी है । वहां केवल दिखावा और आडम्बर है । उन्हें केवल सदा संघर्ष करते रहने में ही आनन्द है । न तो वह अवसरवादी है और न तो स्वार्थी । इसलिए उन्होंने अपनी पत्नी मालती से कहा, " मैं तुम्हारा पति हूँ । फायदा उठाने वाला गैर आदमी नहीं सोचो क्या बात कहीं ? तुमने कोई गलत बात तो नहीं कहीं, अगर एक औरत इस लायक हो जाये तो इसमें पति-पत्नी का रिश्ता... क्या कह रही हो तुम ? "(1)

जग्गी बाबू को अपनी ही पत्नी से फायदा उठाने की अवसरवादी बात मान्य नहीं । "दाम्पत्य सम्बन्धों की यह स्थिति आज के सामाजिक जीवन के उन परिदृश्यों को प्रस्तुत करती है जो एक किस्म का सामाजिक तनाव करती है । यह सामाजिक तनाव सम्बन्धों के उन वैविध्य को प्रस्तुत करते हैं जो सामाजिक मूल्यों पर आघात करते हैं ।"(2) मालती और जग्गी बाबू के तनाव के कारण उनकी बेटी लीला को सहन करना पड़ता है । और जग्गी बाबू लीली को बोर्डिंग में भर्ती कर देते हैं और उसकी परवरिश करते हैं इस प्रकार इस उपन्यास की कथा बड़ी ही रोचक औरसुघड़ है। कमलेश्वर ने इस विधा को नया आयाम और रूप तो दिया ही है साथ ही साथ नवीन कथ्य विषय और शैली भी दी है ।

(4) आगामी अतीत :

इस उपन्यास में कमलेश्वर ने काली आँधी की भाँति असफल सम्बन्धों की परिणति किस प्रकार होती है इसका मार्मिक चित्रण किया है । आज की सामंतावादी और पूँजीवादी सामाजिक व्यवस्था को गलत और घातक तरीकों को अपनी, सफलता कैसे मिलती है इसका चित्रण आगामी अतीत में हुआ है । इस लघु उपन्यास का नायक है कमल बोस जिसने अनेक उचित अनुचित और सही गलत मार्गों को अपना कर अभूतपूर्व यश और कीर्ति प्राप्त की है । किन्तु इस यश और कीर्ति को प्राप्त करने के पश्चात् भी कुछ ऐसा है जो कमल बाबू भीतर ही भीतर खरोंचते रहता है, कोई ऐसा भी है जो उन्हें बार - बार याद आते रहता है ।

---

1. कमलेश्वर - काली आँधी - पृ0 10
2. कृष्ण करडिया - कमलेश्वर - पृ0 20।

काली आँधी की नायिका की भाँति कमल बोस भी पूँजीवादी व्यवस्था की मूलतः महत्वकाक्षाओं के शिकार हुए हैं । जो अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए साधनहीन आम आदमी का इस्तेमाल करने से किसी प्रकार का पथ्य नहीं रखते ।

आधुनिक शहरों की नजदीक से देखी जिन्दगी, इन शहरों में निवास करने वाले व्यक्तियों के दुख, दर्द, उनकी आशा, आकाँक्षायें तथा निराशा, अभाव और व्यथा सभी कुछ इस रचना में बड़े ही स्वाभाविक ढंग से चित्रित किया गया है । सामान्य व्यक्ति के दुख दर्द को सही तरीके से अभिव्यक्ति दी है । मनुष्य के भीतर जितनी भी अच्छी और बुरी बातें होती हैं, स्नेह और नफरत के जितने भी भाव होते हैं उन सभी को अत्यन्त तीव्र अभिव्यक्ति इस लघु उपन्यास में मिली है । जिस स्थिति और परिवेश को लेकर कमलेश्वर ने यह रचना लिखी है उसमें इस देश की कटी हुई जमी का संसार की परिवर्तित स्थितियों के साथ तथा बिखरते हुए और टूटे मूल्यों की प्रक्रिया को मध्यवर्गीय परिवार के सन्दर्भ में चित्रित किया गया है । "कमलेश्वर के उपन्यासों की कथा भूमि जीवन के यथार्थ को अपने वास्तविक रूप में चित्रित करती है । उनकी पटकथा भूमि स्थितियों और पात्रों के माध्यम से विश्वसनीय लगती है, कहीं भी कृत्रिम या आरोपित नहीं होती उपन्यासों का यह परिवेश " वस्तु " के अनुकूल है । उन्होंने अपने सभी उपन्यासों में मानवीय पक्ष को सम्वेदना के धरातल पर सहजता और कलात्मकता से स्थापित किया है । "(1)

आगामी अतीत में कमलेश्वर ने उन व्यक्तियों की जिन्दगी का अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया है जिनको आमतौर पर उपेक्षा होती है । इस रचना को पढ़ने के पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है कि लेखक ने उपेक्षा से सहते जिन्दगी को व्यतीत करने वाले पात्रों को मुखरित किया है । कमलेश्वर ने यह आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ और उपेक्षित वर्ग अभाव से ग्रस्त जिन्दगी कैसी बिता रहा है । इसका स्वाभाविक चित्रण इस लघु उपन्यास में किया है । "कमलेश्वर ने आगामी अतीत उपन्यास में कस्बे की वेश्याओं की जिन्दगी को अत्यन्त सूक्ष्मता एवं स्वाभाविकता से अंकित किया है । उसके जीवन में आर्थिक संकट के कारण कितनी कटुता आ गयी है । लेखक ने सहज और यथार्थ चित्रण करके उनकी दारुण कथा तथा दयाहीन परिस्थितियों को पाठक के सामने रखा है, जो उनकी भाषा से ही स्पष्ट हो जाता है । " (2)

---

1. कृष्ण कुरडिया -- कमलेश्वर - पृ0 201
2. पूर्वोक्त - पृ0 203

इस उपन्यास का नारी पात्र चाँदनी के रूप में चित्रण कमलेश्वर ने किया वह निशंसय प्रशंसनीय है । वैसे कमलेश्वर के सभी उपन्यासों में नारी की व्यथा, पीड़ा, अभाव और मानसिक असन्तोष को अभिव्यक्ति मिली है किन्तु आगामी अतीत की चाँदनी को गढ़ने में उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय ही दिया है । चाँदनी का यह कथन उसकीयथार्थ स्थिति और विवशता को सहज ही में प्रकट करता है, "हाँ, ठीक कह रही हूँ । तुम अमीरों के ये इश्क - बिश्क के चोंचले अपने लिये बेकार हैं । हम इश्क नहीं करते पेट भरते हैं पेट । पाँच मिनट में एक आदमी फारिग होता है... समझे ... चले आते हैं मरदुए इश्क लड़ायेंगे ... अबे यहां धन्धा होता है धन्धा ॥ इश्क नहीं ... अगली बार आना बच्चु तो जेब गरम और कमर पुख्ता करके आना।"(1) चाँदनी का कथन उसके यथार्थ भोगे हुए जीवन की कटु अभिव्यक्ति है जीवन को वह जीवन को किसी तरह से जी ही नहीं रही बल्कि पूरे संघर्ष के साथ जुटी हुई है । उसे न तो किसी से शिकवा है और न ही शिकायत जो कुछ वह अब तक देखते और सहते हुए आयी है उसके कारण उसके व्यक्तित्व में एक अजीब सी धार आ गयी है । जिसने उसके व्यक्तित्व को प्रखर बनाया है । चाँदनी के जैसा सजीव और प्रभावी पात्र अन्यत्र कदाचित ही देखने को मिले इसविषय में डॉ० वीरेन्द्र सक्सेना का यह मत उल्लेखनीय है, "आगामी अतीत उपन्यास की एक अन्य विशेषता यह है कि वह हमारे समक्ष चांदनी जैसा जीवन्त और जीवन्त भरा नारी पात्र प्रस्तुत कर सका है । वस्तुतः चाँदनी का चरित्र एक ऐसा चरित्र है जो दूसरे किसी भी हिन्दी उपन्यास में देखने को नहीं मिलता और आश्चर्य इस बात का है कि कमलेश्वर ने उसे अपने व्यक्तित्व कौशल से बिलकुल सजीव रूप में उपन्यास के पृष्ठों पर खड़ा कर दिया है ।"(2) चाँदनी का अनूठा व्यक्तित्व सम्पूर्ण उपन्यास पर छाया हुआ है । उसके द्वारा कहा हुआ एक - एक वाक्य उसकी अंतरमन व्यथा को हृदय में हुए और साथ ही साथ उसके वर्ग चरित्र को प्रकाश में लगाता है । चाँदनी तो प्रतीक है । उसके द्वारा समाज द्वारा उपेक्षित और कुत्सित दृष्टि से देखी जाने वाली वैश्या का निरूपण कमलेश्वर ने बड़ी खूबी से किया है । चाँदनी के बाद का पात्र कमल बोस है । कमल बोस की महत्वकांक्षा उसे चैन से नहीं बैठने देती । वह बड़ा आदमी तो बन जाता है किन्तु राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिये उसने कभी किसी और की बात सोची नहीं । इस प्रकार इस लघु उपन्यास की कथावस्तु रोचक और मनुष्य सफलता की उच्च कोटी पर पहुँचने के लिये क्या करता है इसका सुंदर चित्रण किया है ।

---

1. कमलेश्वर - आगामी अतीत - पृ० 67-68
2. डॉ० * विरेन्द्र सक्सेना - कमलेश्वर - पृ० 195

कमलेश्वर के लघु उपन्यास की यात्रा वैसे सात पड़ावों से होकर गुजरी है । उन्होंने अब तक कुल सात लघु उपन्यास लिखे हैं । इन सात लघु उपन्यासों में से चार उपन्यासों की कथावस्तु की चर्चा की है । उनके शेष तीन लघु उपन्यास भी इतने ही महत्वपूर्ण हैं ।

{5} तीसरा आदमी :

यह उपन्यास ई.1989 में राजपाल एण्ड सन्स द्वारा प्रकाशित हुआ है । "तीसरा आदमी" कमलेश्वर का एक ऐसा लघु उपन्यास है जो बिना किसी बुनावट के सहज शैली में लिखा हुआ है ।

इस उपन्यास की कथावस्तु नये जमाने की है जो आदमी को तीसरे आदमी की छाया दिखाई देती है । पति - पत्नी के बीच किसी "तीसरे आदमी" के आने से मध्यवर्गीय दाम्पत्य में एक संघर्ष आपसी सम्बन्धों के बीच कैसे निर्माण होता है इसका प्रभावी चित्रण इसमें किया गया है । यह उपन्यास मात्र कहानी नहीं है अपितु मध्य वर्गीय दाम्पत्य की मान्यताओं का दस्तावेज बना पड़ा है । इस उपन्यास में प्रथम पुरुष "मैं" की शैली में लिखा यह लघु उपन्यास अनेक स्थलों पर अपने वैशिष्ट को लिये हुए हैं । आकार में लघु होते हुए भी अपने विस्तार और गुण धर्म में यह कृति विस्मृत है । कस्बे का आदमी महा नगर में आते - आते कैसे टूट जाता है इसका सशक्त चित्रण लेखक ने इस रचना में किया है ।

" निम्नवर्गीय परिवार में जन्मे हर सदस्य का अपना स्वयं का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता है । उसके घर में जूते तो सबके अलग - अलग होते हैं पर चप्पलें कुछ इस तरह की खरीदी जाती हैं कि जिसमें एक दूसरे का काम भी निकल जाय। लेखक ने सम्वेदना के माध्यम से हर छोटी मोटी घटना को पकड़ने का सफल प्रयास किया है ।"{1}

पति - पत्नी के सम्बन्ध कुछ इस प्रकार के होते हैं कि उनके बीच तीसरा आदमी आने से जो अन्तर निर्माण हो जाता है वे उसे सहन नहीं कर पाते तीसरे के आने से जीवन में अजीब सा अन्तराल पैदा हो जाता है । मनुष्य के जीवन में ऐसा क्यों होता है इसका मार्मिक चित्रण कमलेश्वर ने इस रचना में किया है ।
" तीसरा आदमी " के रूप में लेखक का यह लघु उपन्यास वर्तमान आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर मध्यवर्गीय व्यक्ति की चेतना के बदलते स्वरूप का चित्र है।"{2}

---

1. घनश्याम मधुप - हिन्दी लघु उपन्यास - पृ० 170
2. डॉ० वीरेन्द्र सक्सेना - कमलेश्वर - पृ० 190

§6§ समुद्र में खोया हुआ आदमी :

यह उपन्यास ई.1989 में लिखा गया है । इस उपन्यास का प्रकाशन राजपाल एण्ड सन्स द्वारा प्रकाशित किया गया । तीसरा आदमी की तरह इस लघु उपन्यास में भी कमलेश्वर ने शहरी जीवन के बिखराव और टूटन को अभिव्यक्त किया है । क्योंकि शहरी जीवन का मूलाधार अर्थ है और अर्थकार का श्रोत अब सूख चुका है । सामान्य आदमी के जीवन संघर्ष का उसके अभावों का चित्रण इस रचना में और भी अधिक प्रभावी हुआ है । इस लघु उपन्यास का प्रत्येक पात्र संघर्षरत है । अपने अभावों से लड़ता हुआ वह बेहतर आर्थिक व सामाजिक जीवन की तलाश में है ।

"स्वतन्त्रता के बाद लिखे दूसरे लेखकों के लघु उपन्यासों में मुझे कोई ऐसा लघु उपन्यास दिखाई नहीं देता जिसमें किसी परिवार या उसके सदस्यों के आंतरिक एवं बाह्य संघर्ष को पर्याप्त बिस्तार और गहराई से चित्रित किया जा सका हो और जो इतना प्रभावी भी हो जितना कि समुद्र में खोया हुआ आदमी "§1§

जिस परिवेश और परिवार के जीवन संघर्ष का चित्रण इस लघु उपन्यास में हुआ है । वह मात्र दिल्ली का ही नहीं है अपितु वह भारत का कोई भी नगर हो सकता है । क्योंकि श्यामलाल की तरह पेंशन याफ्ता कोई भी बाप अपनी बेटी तारा को चालीस रुपये पाने वाले हरवंश के साथ भेज देता है । " जैसे घर को सिर्फ चालीस रुपये महावार की जरुरत थी श्यामलाल को लगता है कि वह सिर्फ फालतू चीज की तरह रह गया है, जिसे फेंका नहीं जा सकता सिर्फ बरदास्त किया जा सकता है । जिसे सहा भी नहीं जाता सिर्फ होने को महसूस किया जाता है ।§2§ श्यामलाल के घर में काला सन्दूक धरा है जिसमें दादी और बाबा के जमाने की यादे बन्द है । पर तारा जब गर्भवती रह जाती है तब रश्मि को अपनीपड़ोसन से गर्भ गिराने के विषय में पूँछना पड़ता है । और वह उसे आश्वस्त करते हुए कहती है" आप परेशान न हों । जगह मैं आपको बता दूँगी । हमारी बुआ की कुँवारी लड़की थी। उसका सारा काम हमने कराया था ।"§3§ इस कथन से रश्मि को शान्ति मिलती है। ताराकीयह स्थिति आज सामान्य रूप से हर नगर और महानगर में सामान्य ही हो गयी है । क्योंकि सामाजिक सन्दर्भों में नैतिक मान्यतायें बदलती जा रही हैं ।

---

1. डॉ० विरेन्द्र सक्सेना - कमलेश्वर - पृ० 190
2. कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी - पृ० 13
3. पूर्वोक्त - पृ० - 28

और इसी का यथार्थ चित्रण कमलेश्वर ने किया है । वीरेन्द्र के समुद्र में खो जाने से सारा परिवार ही मानो समुद्र में खो जाता है । हरवंश, श्यामलाल और रश्मि को विरेन्द्र की मौत स्वीकारने को कहता है कि उसका मुआवजा मिल सके । वह उन्हें बेटे की तलाश पर मकान और भविष्य बनाने की राय देता है । इसी लालच में रश्मि पति को छोड़ देती है और बेटी को हॉस्टल शरीक कर देती है ।

इस लघु उपन्यास में शहरी निम्न मध्यवर्गीय परिवार के विघटन की कथा है । वह तमाम समाज के बदलते व्यक्तिगत पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्धों को प्रत्यक्ष रूप में इसमें प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । यह उपन्यास की रचना जहाज की संज्ञा से अभिसित किया है ।

§7§ "लौटे हुए मुसाफिर" :

यह उपन्यास ई. में राजपाल एण्ड सन्स द्वारा प्रकाशित की गई है । इस उपन्यास की कथा देश के विभाजन को लेकर लिखा गया कमलेश्वर का यह प्रथम लघु उपन्यास है जिसमें बँटवारे की भीषणता को, खून खराबी को यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है । यह एक ऐसी रचना है जिसमें निम्न वर्ग और शहरी जिन्दगी को चित्रित किया गया है । वे लोग जो आजादी की लड़ाई में साथ लड़े थे बँटवारे से एक दूसरे के दुश्मन हो गये थे । "साथ ही साथ इस उपन्यास के अतिरिक्त विशेषता यह है कि यह केवल किन्हीं दो या चार पात्रों की दुख भरी कहानी मात्र नहीं रह जाती, अपितु एक पूरे समुदाय की परिस्थिति जन्य यातनाओं को प्रस्तुत करने वाली रचना के रूप में आजादी के पूर्व भारत में प्रत्येक "कस्बे और शहर में" सामने आती है ।"§1§ साम्प्रदायिकता की आग लगी हुयी थी । इसके कारण कई लोगों के सामने रोजी रोटी का सवाल था । इफ्तीकार भाई को अपने तांगें में सवारियाँ नहीं मिलती थी ।

"स्टेशन का रास्ता सुनसान है इसीलिए उन्हें डर लगता है, अरे पूँछो यही पैदा हुआ.... यही रहा बला, अब लोग मन ही मन ही मुझ पर शक करते हैं । समझ में नहीं आ रहा यह क्या हो रहा है ? बड़े बुझे मन से इफतिकार ने कहा था ।"§2§

1. कृष्ण कुरडिया - कमलेश्वर - पृ0 217
2. डॉ0 विरेन्द्र सक्सेना - कमलेश्वर - पृ0 198

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बँटवारे में लोगों के दिमाग दुरूस्त नहीं थे । रतन और मकसूद ने जो गद्दारी की उसी के लिए इस देश को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी । उसी के परिणाम स्वरूप कई सलमा और सत्तार और बच्चन और नसीबन की कुरबानियाँ उस लोगों को सुधार नहीं सकी ।" वस्तुतः कमलेश्वरनेलौटे हुए मुसाफिर में उन अबोध लोगों की कथा को आधार बनाया है जो केवल अपनी रोजी - रोटी के लिए संघर्षरत थे, परन्तु साम्प्रदायिकता की लहर में बह गए और वही आदि स्थान तक पहुंच सके और न ही लौटकर वापस आ सके । अन्त में जो लोग लौट कर आये वे मजदूर बन कर ही आये । कमलेश्वर के महत्वपूर्ण उपन्यासों में से एक है । डॉ० सिन्हा के शब्दों में -- "लौटे हुए मुसाफिर में आस्था, आत्मविश्वास, कर्तव्यपरायणता, देशानुरूप एवं दायित्व निर्वाह का जो उन्होंने महान सन्देश दिया है वह आज के परिश्रम में अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इसलिए इस पीढ़ी के प्रकाशित उपन्यासों में कमलेश्वर का यह उपन्यास विशेष उल्लेखणीय हो जाता है ।"(1)

---

1. डॉ० सुरेश सिन्हा "हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास" - पृ० 558

कमलेश्वर जी की कहानियों का कथा - संगठन :

कहानी और उपन्यास के गठन में पर्याप्त अन्तर होता है । उपन्यास में -- " एक प्रमुख कथानक के साथ कई अवान्तर कथाएँ भी लिपटी चलती है । इसका चित्र फलक व्यापक होता है जिसमें कथानक का उत्थान - पतन बारी - बारी से होता रहता है । पर कहानी विस्तार से सदा बचना चाहती है । कहानी - लेखन को अर्जुन की भाँति लक्ष्य पक्षी के केवल सिर पर दृष्टि टिकानी होती है अन्यथा निशाना चूक जाने की अधिक सम्भावना रहती है ।"(1) इसके साथ - साथ जीवन की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए उपन्यासकार छोटी - छोटी अनेक घटनाओं एवं परिस्थितियों का विस्तृत चित्रण करता है, जबकि कहानीकार बहुत तेजी से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ाता है और अनावश्यक विस्तार के मोह में नहीं फँसता । इस कसौटी पर कमलेश्वर जी की कुछ कहानियाँ पूर्णरूपेण खरी नहीं उतरती । यों कमलेश्वर जी की कहानियाँ आकार में बड़ी नहीं है, किन्तु उनकी सभी कहानियों में किसी - न - किसी प्रकार की भूमिका बाँधने की प्रवृत्ति मिलती है । कुछ कहानियों में ये भूमिकाएँ सार्थक और आकर्षक है ।

कमलेश्वर जी की कहानियों में कस्बे को लेकर लिखा गया है । उनकी कहानियों में कस्बे का जीवन जितनी प्रामाणिकता से चित्रित हुआ है, उतनी अच्छी तरह नगर जीवन नहीं । नगर - जीवन और महानगरीय जीवन पर भी लिखी उनकी वे ही कहानियाँ अधिक सशक्त और सफल हैं जिनमें कस्बे का व्यक्ति वहाँ जाकर अपने को खोया पाता है या कस्बे के जीवन मूल्य वहाँ जाकर समाप्त हो रहे हैं, कमलेश्वर ने अपनी कहानियों का आकलन करते हुए अपनी पृष्ठ भूमि (लोकेल) तीन मानी हैं - मैनपुरी इलाहाबाद का समय, दिल्ली आने का समय और फिर बम्बई पहुँचने का समय । उनका कहना है कि इन तीनों पृष्ठभूमियों ने उन्हें कहानियाँ दी है ।

" खोयी हुई दिशाएँ " उनकी महानगरीय जीवन पर लिखी सफल और चर्चित कहानी है किन्तु उसमें दर्द और व्यथा है । इस कहानी में चन्दर महानगर में आकर खो गया है । यह चन्दर अपनी निजता की तलाश में भटकता रहता है । वह महानगर में पहुँच कर भी अपना कस्बा तलाश रहा है ।

---

1. डॉ० त्रिभुवन सिंह - हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद - पृ० 94

इसी प्रकार मुरदों की दुनियां नामक कहानी में कस्बाई मनोवृत्ति के अनुसार बसों की बात बड़े महत्वशाली ढंग से की गई है, वहाँ के जीवन में कलाई, ताश खेलने वाले, सवारी को बुला बुलाकर चढ़ाने उतारने वालों का ही महत्व हुआ करता है -- ये ही वहाँ के स्थायी वासिन्दे माने जा सकते हैं । वहाँ के जीवन में यदि परिवर्तन होता है तो मात्र इतना कि प्रायवेट बसों के स्थान पर सरकारी बसें चलने लगती हैं और "सीता सी सावित्री" भी गोरख के सहयोग से अफीम बेचने का गुप्त व्यापार करने लगती और उसी के साथ भाग भी जाती है । कस्बे के जीवन की दैनन्दिनि घटनाएँ ये ही हैं -- जिन्हें कहानीकार ने बड़ी सूक्ष्मता से कहानी में प्रस्तुत किया है ।

कमलेश्वर जी ने कस्बे से हटकर वेश्या समस्या जैसी ज्वलन्त समस्या को उठाकर नारी को नये रूप में प्रस्तुत किया है । "मांस का दरिया" इसी कारण एक विशिष्ट कहानी बन पड़ी है ।

यह एक ऐसी वेश्या की कहानी है, जो अपना सारा जीवन कोठे में ही बिता देती है । उसका शरीर में रोग के कारण, उसकी मनोवेदना बढ़ जाती है और वह उम्र भर का हिसाब-किताब करने लगती है । जुगनू नामक वेश्या उपचार का ऋण चुकाने के लिए फिर से अपने कर्जदार कंवरजीत को जांघ पर फोड़ा होने पर भी वह सब कुछ सहन करती है । कंवरजीत ने जुगनू की जांघ को दबाया फिर भी जुगनू ने अपनी कराह दबाई और कंवरजीत को रोका । आंखों के सामने अंधेरा छा - छा जाता था और जोर पड़ते ही जांघ फटने लगती थी -- अरे रूक तो - वह चीखा था और जुगनू की टांगे दबाकर हावी हो गया था । वह जोर से चीखी थी -- जैसे किसी ने कत्ल कर दिया हो और वह बेहोस हो गयी थी । कंवरजीत के जाने के बाद वह फत्ते से पानी मंगवाती है और फिर नीली कमीज और झोले वाले को, जो कंवरजीत के आने से पहले लौटा था, बुलाने के लिए कहकर एक बार फिर रोक लेती है ।

यह कहानी सिर्फ जुगनू की कहानी नहीं है बल्कि समस्त वेश्या - वर्ग की कहानी है, कमलेश्वर की कहानियों में यथार्थ -- चित्रण का यदि मार्मिक उदाहरण देखें तो "अकाल" कहानी है । "अकाल" का चित्रण इतना सजीव है कि पाठक की आँखें आंसू बहाती हैं । इस कहानी में एक परिवार है, जो क्षुधातुर है, उनमें दावत के प्रति ललक है, जैसे अच्छा भोजन कभी देखा न हो । निमन्त्रण मिलने पर वे सब प्रसन्न तो हो जाते हैं, परन्तु किसी की कमीज पर बटन नहीं है, किसी की कमीज पर बटन नहीं है, किसी के जूतों में फीते नहीं हैं ।

किसी की नेकर मैली है । फिर भी वे सब चल पड़ते हैं । बातों - ही - बातों में पैदल रस्ता कट जाता है । सुन्दरसिंह के सजे - सजाए घर में पहुँचकर --
"दावत के इन्तज़ार में भोली - भाली आँखें लिए वे खामोश बच्चे जैसे उनका राज खोलें दे रहे थे - हम भूखे हैं । हम आज पेट भर खाने के लिए खड़े हैं, हम मिठाई खाएँगें, हम नमकीन खाएँगें, रायता और चाट तरकारी खाएँगें ।"§1§
दावत आरम्भ होने पर क्या रघुनन्दन लाल या उनके बच्चे कुछ भी खा पाते हैं ? रघुनन्दन लाल के दांत कुछ भी चबा नहीं पाते, बच्चों की खाने की गति धीमी होने के कारण रघुनन्दन लाल की आदेश भरी आँखें उन्हें खाने की मेज से उठा देती हैं । बिना रिक्शा किए ही ये सब घिसटते - घिसटते घर पहुँचते हैं और रघुनन्दन लाल --
" खाट पर लेटते हुए पत्नी को धीरे से पास बुलाकार बोले -- "सुनो कुछ बचा है ?"§2§
कितना कारुणिक यथार्थ है, निर्धनता कितना बड़ा अभिशाप है -- इसका प्रमाण आँखों के समक्ष चित्रवत् उपस्थित चारों बच्चे दे देते हैं ।

कमलेश्वर जी की "राजा निरबंसिया" सर्वश्रेष्ठ कहानी मानी गई है । इस कहानी में वर्ग - वैषम्य बहुत ही सुन्दरता के साथ चित्रित किया गया है । इस कहानी में दो कथाएँ एक साथ चलती हैं -- एक तो पौराणिक लोक कथा, राजा - रानी की तथा दूसरी लेखक की कल्पना, निम्न मध्यवर्गीय जगपति तथा चन्दा की । राजा-रानी की कहानी में रानी के माध्यम से नारी पुरूष से ऊँचा उठने का प्रयास करती है और उठ भी जाती है ।

दूसरी कहानी जगपति और चन्दा की है । निम्न मध्यवर्गीय स्थितिवाला जगपति और उसकी पत्नी चन्दा दोनों परस्पर प्रसन्न एवं सन्तुष्ट हैं, वे दोनों चार वर्षों के वैवाहिक जीवन के उपरान्त भी निःसंतान हैं । जगपति अचानक जब अस्वस्थ हो जाता है तो धन के अभाव, संतान का दुःख चन्दा को जैसे झकझोर जाता है और चन्दा की इस विवशता से बच्चनसिंह लाभ उठाता है । वह शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर लेता है । परिणामतः वह जगपति द्वारा पीटे जाने पर मायके भेज दी जाती है कालान्तर में उसके पुत्र उत्पन्न होता है । "चन्दा किसी और के यहाँ बिठा दी जाएगी"- यह विचार जगपति को व्याकुल कर देता है और वह आत्म हत्या कर लेता है। जगपति दो पर्चे लिखकर छोड़ जाता है -- "एक चन्दा के लिए - "चन्दा मेरी अन्तिम चाह यही है कि तुम बच्चे को लेकर चली आना ... चन्दा, आदमी को पाप नहीं पश्चताप मारता है, मैं बहुत पहले मर चुका था ।"§3§

---

1. अकाल §कहानी§ : बयान तथा अन्य कहानियाँ §संग्रह§ - कमलेश्वर - पृ0 69
2. पूर्वोक्त - पृ0 74
3. राजा निरबंसिया §कहानी§-कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियां - पृ0 50

दूसरा कानून के दावेदार के लिए -- "किसी ने मुझे मारा नहीं है । मैने अफ़ीम नहीं रूपये खाए हैं । उन रूपयों में कर्ज का जहर था, उसी ने मुझे मारा है । मेरी लाश तब तक न जलाई जाए जब तक चन्दा बच्चे को लेकर न आ जाए -- आग बच्चे से दिलवाई जाए ।"(1)

राजा रानी की कहानी तो एक संकेत है, कहानी तो है चन्दा और जगपति की । इन दोनों के माध्यम से कमलेश्वर ने निर्धन वर्ग के मन की थाह ली है । जगपति और चन्दा जैसे अभिशप्त नर - नारी को पारस्परिक विरोध में रखकर कमलेश्वर जी ने यह चित्रित करने का प्रयास किया है कि यदि धन हो, चरित्र हो या न हो, नैतिकता हो या न हो, तो मनुष्य समाज में पूजा जा सकता है, जैसे कि राजा-रानी समाज में समादरित होते हैं, धन उनके सभी कृत्यों पर आवरण डाल देता है ।

इसी प्रकार कहानी कहने - सुनने के लिए वातावरण बनाने के लिए भी कमलेश्वर जी ने बड़ी अच्छी भूमिकाएं बाँधी हैं । "कितने पाकिस्तान" नामक कहानी भी एक सार्थक कहानी है ।

इसी प्रकार "आत्मा की आवाज" में कस्बाई जीवन का सफल चित्र देखने को मिलता है । भाभी का संकोचपूर्ण और लज्जालु व्यवहार उनके व्यक्तित्व के आकर्षक पहलू हैं । उनके मौन नमस्ते द्वारा भावभीनी विदाई कम आकर्षक नहीं है । उनके ऊपर डांट पड़ना भी कम सत्य नहीं है । धीरे - धीरे कस्बाई जीवन में भी आधुनिकता प्रवेश कर चुकी है । इसलिए स्पष्टतः वहाँ भी दो वर्ग बन चुके हैं -- एक तो पुरानी मान्यताओं से चिपका माँ - पिता का वर्ग और दूसरा वर्ग पुत्र - पुत्रियों का है जो परम्पराओं के बंधन को स्वीकार नहीं करता । इन दोनों वर्गों के दर्शन हमें "तीन दिन पहले की रात" में होते हैं । मीनू के डैडी - मम्मी जब मीनू के लिए वर ढूंढ़ते हैं तो उनके लिए वर की अच्छाई उसकी नौकरी, उसके पद, उसकी दुनियादारी से आँकी जाती है जबकि मीनू के लिए वर की अच्छाई ऊँचे विचारों की सम्पन्नता में है । ऐसे ही विचारों के कारण मीनू दिवाकर के समक्ष न तो जितने को ही उतना अधिक पसन्द कर पाती और न तो अमर को ही । उसकी शादी अमर से हो जाती है, वह उसे प्रेम भी करने लगती है, लेकिन अमर की बाहों में कैद होकर भी वह दिवाकर को नहीं भुला पाती । युवती के आधुनिक जीवन की यही नियती है ।

---

1. राजा निरबंसिया (कहानी) : कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ, - पृ० 50

नगर - बोध के अन्तर्गत साइनबोर्ड की ओर किसी का ध्यान न आकृष्ट होता हो, लेकिन कस्बाई जीवन के लिए ये अब तक नवीन उपलब्धि ही बने हुए हैं। "गरमियों के दिन कहानी" का प्रमुख स्वर चाहे व्यंग्यात्मक ही हो, लेकिन साइन-बोर्डों के विविध प्रकारों की चर्चा से इतना तो स्पष्ट ही हो जाता है कि कस्बाई मनोवृत्ति के अन्तर्गत भी कस्बाई जीवन में विज्ञापनों का बड़ा महत्वपूर्ण कार्य हुआ करता है । इसी प्रकार एक साइनबोर्ड, कहानी में, वैधराज भी लगवाने में लगे हुए हैं । वैधराज भी सामान्य वैद्य नहीं, बल्कि बाहर से वैधराज का बोर्ड लगाकर अन्दर लेखपाली का कार्य करते हैं तथा अशोकारिष्ट के लेबिल लगे बोतल में तारपीन का तेल रखते हैं -- तथा इसी तरह के सभी लेबिल कुछ दूसरे हैं और उनमें सामान दूसरे ही भरे हैं ।"§1§ कस्बाई मनोवृत्ति में §चायघर§ सचमुच ही अनोखी वस्तु है "जिसमें §चायघर§ में उबलते पानी में पत्ती छोड़कर चाय बनायी जाती है एक बार, और फिर उसी पत्ती को उबालकर रंग उतारा जाता है बार - बार । इसकी दीवारों को कभी साफ किया जा चुका है, पर उन पर फिर से रंगाई होना कठिन है । एक लम्बा-सा कमरा है जिनमें चौकोर मेज के इर्द-गिर्द हरी रंगी हुई कुरसियाँ हैं और दोनों तरफ चितकबरी दृष्ट दीवार के सहारे दो बेंचों के सामने एक लम्बी-सी मेज "§2§ आदि सचमुच ही कस्बे के किसी चायघर का जीवन्त चित्र उपस्थित करता है । ऐसा नहीं कि केवल नगर - बोध के ही अन्तर्गत पुरानी परम्पराओं के विरोध में नारियाँ क्रान्ति कर रही हैं, बल्कि कस्बाई मनोवृत्ति में भी यह क्रान्ति घुसती जा रही है । ये स्त्रियाँ परम्परा के "सींखचों" की कैद को तोड़कर बाहर आ जाना चाहती हैं --- " इन सात फेरों में क्या विशेषता है ? क्या शक्ति है ?... तो पति में ऐसी क्या विशेषता है ? वह स्त्री के लिए कैसा वरदान है ? "§3§

कमलेश्वर जी इलाहाबाद से दिल्ली जाने के बाद प्रत्यक्षतः अनुभव - बोध में एक आकस्मिक बदलाव आया । उन्होंने स्वतः स्वीकार किया है -- "इस संग्रह की §खोई हुई दिशायें§ कहानियाँ एक बदली हुई मनः स्थिति की कहानियाँ है । तीन वर्ष पहले मुझे टेलीविजन की नौकरी के सिलसिले में दिल्ली आना पड़ा । इलाहाबाद छोड़ते हुए बड़ी तकलीफ हुई, पर यहाँ आकर जब चारों तरफ देखना शुरू किया तो लगा कि एकाएक सब कुछ बदल गया है । यहाँ एक नई जिन्दगी थी, एक ऐसी जिन्दगी

---

1. "राजा निरबंसिया" -"गरमियों के दिन" - कमलेश्वर - पृ0 138
2. पूर्वोक्त - "चायघर"-कमलेश्वर - पृ0 175
3. पूर्वोक्त - "सीखचे" - कमलेश्वर - पृ0 175

– जिसके किनारे खड़े होकर देखने से बहाव का पता ही नहीं चला था .... एक अजीब – सा परायापन और बेगानापन हैं यहाँ ।"(1)

इस परिवर्तित बोध की उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं -- "खोई हुई दिशायें", "दिल्ली में एक मौत", "दिल्ली में एक और मौत", "जार्ज पंचम की नाक", "पीला गुलाब", "साँप", "एक रुकी हुई जिन्दगी", "माँस का दरिया", "राजा निरबंसिया", "युद्ध", "दुखों के रास्ते", "तलाश" आदि । इन कहानियों में प्रमुख रूप से आज के अजनबीपन, देश रक्षा के लिए उत्पन्न जनून, फर्ज अदायगी, आज की स्थितियों पर करारा व्यंग्य, मन के कोनों में समाये प्रेम की अभिव्यक्ति आज की जिन्दगी में आये ठहराव, मांस का दरिया बहाने की मजबूरी, विकसित होकर भी हम कितने पिछड़े हैं, भूख बेकारी और बीमारी, आर्थिक प्रयत्नों में किसी का मित्र हो जाना, पुत्री – माता के परिवर्तित दृष्टिकोण के चित्र उपस्थित किये गये हैं ।

उनके कहानी संग्रह "जिन्दा मुर्दे के साथ भी उसके दृष्टिकोण में परिवर्तन आया जब उन्होंने पहली बार महानगर की उलझी हुई जिन्दगी के छोर सुलझाये। ".... राजनीति सचमुच क्या होती है, भ्रष्ट राजतंत्र और नौकरशाही सत्ता द्वारा लगाये गये अप्रत्यक्ष प्रतिबन्ध और उसमें घुटते संघर्ष करते व्यक्ति की क्या हालत है -- यह सब दिल्ली में ही पहली बार बहुत गहराई से दिखाई दिया । यह भी लगा कि इस तंत्र पर कहीं से भी कोई प्रहार नहीं किया जा सकता है ।"(2) इस बोध की प्रमुख कहानियाँ हैं -- "अपने देश के लोग", "नया किसान", "अपने अजनबी देश में", "जिन्दा मुर्दे", "ब्रांच लाइन का सफर", "भरे – पूरे अधूरे", "आत्मा अमर है", "शरीफ आदमी", "नाक", "स्मरण", "फालतू आदमी", "कितने – पाकिस्तान" आदि ।

कमलेश्वर जी की कहानियों की कथा वस्तु अत्यन्त व्यापक है जो कस्बाई जीवन – बोध से लेकर नगर – बोध तक व्याप्त है । यह सच है कि इनकी कहानियाँ का प्रारम्भ कस्बाई मनोवृत्ति से ही होता है । इनका कथा – शिल्प अलंकृत है, एक प्रकार की "स्वप्नलता" लाने की कोशिश अवश्य की गई है, लेकिन वह भी अलंकारों के माध्यम से नहीं ।

---

1. खोई हुई दिशायें – नई कहानी की बात (भूमिका) – कमलेश्वर – पृ० 10
2. जिन्दा मुर्दे – ये कहानियाँ "भूमिका" – कमलेश्वर – पृ० – क और ख